

मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित

कहानी

पंच परमेश्वर

कॉमिक्स



डिज़ाइन

ब्रजेश गुप्ता

जनपद - बस्ती



मिशन

शिक्षण

संवाद

Mission Shikshan Samvad

पंच परमेश्वर

लेखक: मुंशी प्रेमचंद जी, कॉमिक निर्माण: बृजेश गुप्ता

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ था जब दोनों बालक ही थे। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन देन में भी साझा था। दोनों को एक दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन के भरोसे अपना घर छोड़ देते थे।



जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थी। उनके पास थोड़ी सी जायदाद थी, परंतु उनके निकट संबंधियों में जुम्मन के अलावा कोई नहीं था।



कुछ दिन खाला ने सब सुना और सहा, पर जब न सहा गया तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने गृह स्वामिनी के प्रबंध में दखल देना उचित न समझा। कुछ दिन तक और यों ही रो- धोकर काम चलता रहा। अंत में एक दिन खाला ने कहा,

"रुपए क्या यहां फलते हैं?"



खाला बिगड़ गई। उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी।

पंचायत के लिए बूढ़ी खाला लोगों को संदेश देने लगी।



एक दिन संध्या के समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जुम्नन शेख ने पहले से ही सारा प्रबंध कर रखा था। पंच लोग बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की,



सरपंच किसे बनाया जाय, इस प्रश्न पर जुम्नन शेख और खालाजान में कुछ कहा - सुनी हो गई।

संवाद
अंत में खाला बोलीं -



जुम्मन शेख आनंद से फूल उठे, परंतु मन के भावों को छिपाकर बोले,

अलगू चौधरी सरपंच हुए। उन्होंने कहा,

"शेख जुम्मन! हम तुम पुराने दोस्त हैं, मगर इस समय तुम और बूढ़ी खाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।"

"खुदा गवाह है, आज तक मैंने खालाज़ान को कोई तकलीफ़ नहीं दी।"

"चलो, अलगू चौधरी ही सही।"

अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की। जुम्मन चकित थे कि अलगू को हो क्या गया है? अभी तो यह मेरे साथ बैठे थे। अब इतने प्रश्न मुझसे क्यों पूछते हो? जुम्मन यह सब सोच ही रहे थे कि अलगू ने फैसला सुनाया,

"जुम्मन शेख! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह उचित मालूम होता है कि खालाज़ान को माहवार खर्च दिया जाय। बस यही हमारा फैसला है। अगर खर्च देना मंज़ूर न हो तो रजिस्ट्री रद्द समझी जाय।"

फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। अलगू के फैसले की सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे, पर इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। जुम्मन को यह फैसला आठों पहर खटकने लगा।

जुम्मन इस ताक में थे कि किसी तरह अलगू से बदला लेने का अवसर मिले।

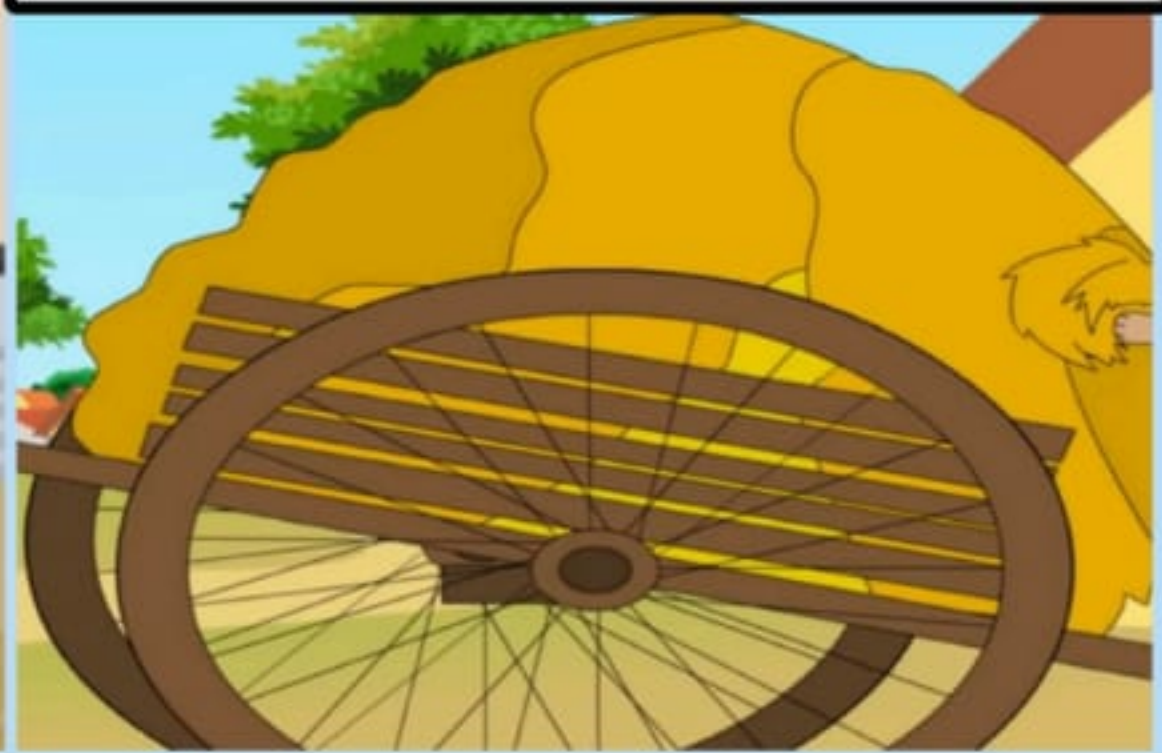
ऐसा अवसर जल्द ही जुम्मन के हाथ आया। अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाए थे।

देव योग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का?



गांव में समझू साहू थे। उन्होंने एक महीने में दाम चुकाने का वादा करके चौधरी से बैल खरीद लिया।

समझू साहू ने नया बैल पाया तो लगे रगदने। न चारे की फ़िक्र, न पानी की। वह दिन तीन तीन, चार - चार खेपें करने लगे।



एक दिन साहू जी ने दूना बोझ लाद दिया। बैल ने जोर लगाया, पर वह आधे रास्ते में ही धरती पर गिर पड़ा। ऐसा गिरा कि फिर न उठा।

इस घटना को कई महीने बीत गए। अलगू जब बैल का दाम मांगते, तब साहू - सहु वाइन दोनों झल्ला उठते।



मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम मांगने चले है!



इसी तरह कई बार झगड़े हुए पर साहू जी ने बैल का दाम न चुकाया। लोगों ने अलगू और साहू जी को समझाया कि पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो उसे स्वीकार कर लो। दोनों लोगों ने हामी भर दी। उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी।

मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम मांगने चले है!



"समझू साहू ही चुन लें।"

समझू साहू खड़े हुए और कड़क कर बोले,

"मेरी ओर से जुम्न शेख।"

सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्न में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुए। सत्य से जौ भर भी टलना मेरे लिए उचित नहीं है। पंचों ने दोनों से काफ़ी देर तक बहस की। अंत में जुम्न ने फैसला सुनाया,

फ़ैसला सुनकर अलगू चौधरी फूले न समाए, उठ खड़े हुए और जोर से बोले,

थोड़ी देर बाद जुम्न अलगू के पास आए और उनके गले से लिपट गए। अलगू रौने लगे इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

"पंच परमेश्वर की जय"

"अलगू चौधरी और समझू साहू! पंचों ने अच्छी तरह विचार किया। समझू के लिए उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। बैल की मृत्यु कठिन परिश्रम के कारण हुआ।"

मुंशी प्रेमचंद (सन 1880-1936)

Design: बृजेश गुप्ता, 9935153699



संकलन

Mission Shikshan Samvad